



माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Sanjai Kumar, Research Scholar, Department of Education,

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

Dr. Sarvesh Yadav, Assistant Professor, Department of Education,

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग एवं सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों में ऐसे सामाजिक मूल्यों का विकास करना भी आवश्यक हो गया है, जो उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायक हों। माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थियों का नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास तीव्र गति से होता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्य किस स्तर तक विकसित हैं। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-विधि को अपनाया गया है। अध्ययन के लिए विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से डाटा एकत्र किया गया तथा उसका विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों में अनुशासन एवं सहयोग का स्तर संतोषजनक पाया गया, जबकि सहिष्णुता के स्तर में कुछ कमी देखी गई। यह भी पाया गया कि विद्यालय का वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ सामाजिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह शोध शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द

माध्यमिक विद्यालय, सामाजिक मूल्य, अनुशासन, सहयोग, सहिष्णुता

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख आधार होती है। आधुनिक युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीक-प्रधान समाज में यह देखा जा रहा है कि विद्यार्थियों में शैक्षिक दक्षता तो बढ़ रही है, किंतु सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट की चिंता भी बढ़ती जा रही है। ऐसे में विद्यालयों की भूमिका केवल शिक्षण संस्था की नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों के संवर्धन के केंद्र के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

माध्यमिक शिक्षा का स्तर विद्यार्थी जीवन का एक संवेदनशील और निर्णायक चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों के विचार, व्यवहार और दृष्टिकोण का निर्माण तीव्र गति से होता है। इसी काल में उनमें अनुशासन,

सहयोग, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिकता जैसे मूल्यों की नींव पड़ती है। यदि इस स्तर पर विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का उचित विकास नहीं हो पाता, तो आगे चलकर समाज में असंतुलन, असहिष्णुता और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

वर्तमान समय में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन, सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता, डिजिटल माध्यमों का बढ़ता प्रभाव तथा प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा प्रणाली ने विद्यार्थियों के व्यवहार को काफी प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्य और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। विद्यालयों के वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा विद्यालयी अनुशासन प्रणाली विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे यह समझा जा सके कि इन मूल्यों का वर्तमान स्तर क्या है और उनके विकास के लिए किन प्रयासों की आवश्यकता है।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारतीय समाज में शिक्षा को सदैव मूल्य-आधारित माना गया है। प्राचीन काल से ही गुरुकुल परंपरा में अनुशासन, सेवा, सहयोग और सहिष्णुता पर विशेष बल दिया जाता रहा है। किंतु समय के साथ शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन हुए हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था अधिकतर परीक्षा-उन्मुख होती जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिक और सामाजिक मूल्यों पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा पा रहा है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से परिवर्तन के दौर से गुजरते हैं। इस अवस्था में वे अपने आसपास के वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। यदि विद्यालय में अनुशासनात्मक ढाँचा सुदृढ़ न हो, सहयोगात्मक वातावरण न मिले और सहिष्णुता को प्रोत्साहन न दिया जाए, तो विद्यार्थियों के व्यवहार में नकारात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं।

आज समाज में बढ़ती असहिष्णुता, अनुशासनहीनता और सहयोग की कमी जैसी समस्याएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इन समस्याओं की जड़ें विद्यालयी जीवन से भी जुड़ी हुई हैं। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों की स्थिति का अध्ययन किया जाए और यह जाना जाए कि अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे मूल्य किस स्तर तक विकसित हो रहे हैं। इसी पृष्ठभूमि में यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है।

1.2 सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता

सामाजिक मूल्य किसी भी समाज की नैतिक दिशा और व्यवहारिक संरचना को निर्धारित करते हैं। अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे मूल्य समाज में सामंजस्य, शांति और प्रगति के लिए अनिवार्य हैं। अनुशासन व्यक्ति को नियमों के पालन, आत्म-नियंत्रण और उत्तरदायित्व की भावना सिखाता है। सहयोग सामाजिक जीवन को सुदृढ़ बनाता है और सहिष्णुता विविधताओं के बीच सहअस्तित्व को संभव बनाती है।

वर्तमान वैश्विक और बहुसांस्कृतिक समाज में सहिष्णुता का महत्व और भी बढ़ गया है। विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों में सहिष्णु दृष्टिकोण का विकास अत्यंत आवश्यक है। विद्यालय इस दिशा में सबसे प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि यहीं से भावी नागरिकों का निर्माण होता है।

यदि शिक्षा प्रणाली में सामाजिक मूल्यों की उपेक्षा की जाती है, तो समाज में तनाव, हिंसा और असमानता जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं। अतः माध्यमिक स्तर पर सामाजिक मूल्यों का विकास न केवल शैक्षिक आवश्यकता है, बल्कि सामाजिक दायित्व भी है।

1.3 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विशेषताएँ

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन का काल है। इस अवस्था में उनमें स्वतंत्रता की भावना, आत्म-पहचान की खोज और सामाजिक स्वीकार्यता की इच्छा प्रबल होती है। वे अपने साथियों और परिवेश से शीघ्र प्रभावित होते हैं।

इस स्तर के विद्यार्थी तर्कशील होते हैं, परंतु भावनात्मक रूप से संवेदनशील भी होते हैं। यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन न मिले, तो वे अनुशासनहीनता, असहिष्णुता या सहयोग की कमी जैसे व्यवहार प्रदर्शित कर सकते हैं। इसलिए इस अवस्था में सकारात्मक सामाजिक मूल्यों का विकास अत्यंत आवश्यक है।

1.4 अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता की संकल्पना

- अनुशासन: नियमों का पालन, आत्म-संयम और उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार।
- सहयोग: दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना, सहायता की भावना और सामूहिकता।
- सहिष्णुता: भिन्न विचारों, मतों और संस्कृतियों को स्वीकार करने की क्षमता।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन के स्तर का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों में सहयोग की भावना का विश्लेषण करना।
- विद्यार्थियों में सहिष्णुता के स्तर का अध्ययन करना।
- सामाजिक मूल्यों के विकास हेतु शैक्षिक सुझाव प्रस्तुत करना।

1.6 अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएँ

अध्ययन का क्षेत्र

- यह अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- अध्ययन में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्यों को शामिल किया गया है।

अध्ययन की सीमाएँ

- नमूना सीमित क्षेत्र से लिया गया है।
- अध्ययन विद्यार्थियों की स्व-रिपोर्टेड प्रतिक्रियाओं पर आधारित है।
- सभी सामाजिक मूल्यों को अध्ययन में शामिल नहीं किया जा सका।

2 साहित्य समीक्षा

1. डॉ. सीमा गुप्ता (2016)

डॉ. सीमा गुप्ता ने अपने अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विश्लेषण किया। उनके शोध में यह पाया गया कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में अनुशासन और सहयोग की भावना

विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन के अनुसार जिन विद्यालयों में शिक्षक-विद्यार्थी संबंध सकारात्मक थे, वहाँ विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का स्तर अधिक पाया गया। यह शोध वर्तमान अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है।

2. डॉ. रमेश चंद्र यादव (2017)

डॉ. रमेश चंद्र यादव ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अनुशासन एवं सहिष्णुता से संबंधित व्यवहारों का अध्ययन किया। शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों में अनुशासन और सहिष्णुता का स्तर अधिक होता है। उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में सहायक सिद्ध होती है।

3. डॉ. सुनीता शर्मा एवं डॉ. अजय कुमार शर्मा (2018)

डॉ. सुनीता शर्मा और डॉ. अजय कुमार शर्मा ने अपने संयुक्त अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सहयोगात्मक व्यवहार का विश्लेषण किया। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि समूह कार्य, खेलकूद एवं सामूहिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सहयोग और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देती हैं। यह शोध दर्शाता है कि सहयोग सामाजिक मूल्यों का एक महत्वपूर्ण घटक है।

4. डॉ. मनोज कुमार सिंह (2020)

डॉ. मनोज कुमार सिंह ने अपने शोध में विद्यालयी अनुशासन और विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के बीच संबंध का अध्ययन किया। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि सुव्यवस्थित अनुशासन प्रणाली वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों में आत्म-नियंत्रण, जिम्मेदारी और सहिष्णुता अधिक पाई जाती है। यह अध्ययन बताता है कि अनुशासन सामाजिक मूल्यों की नींव है।

5. डॉ. प्रियंका मिश्रा (2022)

डॉ. प्रियंका मिश्रा ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सहिष्णुता एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन किया। शोध में यह पाया गया कि विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ अध्ययन करने से सहिष्णुता का विकास होता है। अध्ययन यह संकेत देता है कि विद्यालय सामाजिक विविधता को स्वीकार करने की क्षमता विकसित करने का प्रमुख केंद्र है।

3 . शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसका उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्यों के स्तर का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। शोध में मात्रात्मक विधि अपनाई गई है तथा आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत (:) विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन में किसी भी प्रकार के सांख्यिकीय उपकरण या सॉफ्टवेयर का प्रयोग नहीं किया गया है।

3.1 शोध डिजाइन

इस शोध में वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक शोध डिजाइन का प्रयोग किया गया है, क्योंकि इसमें विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों की वर्तमान स्थिति का वर्णन एवं प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

3.2 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के सभी माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9वीं एवं 10वीं) के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

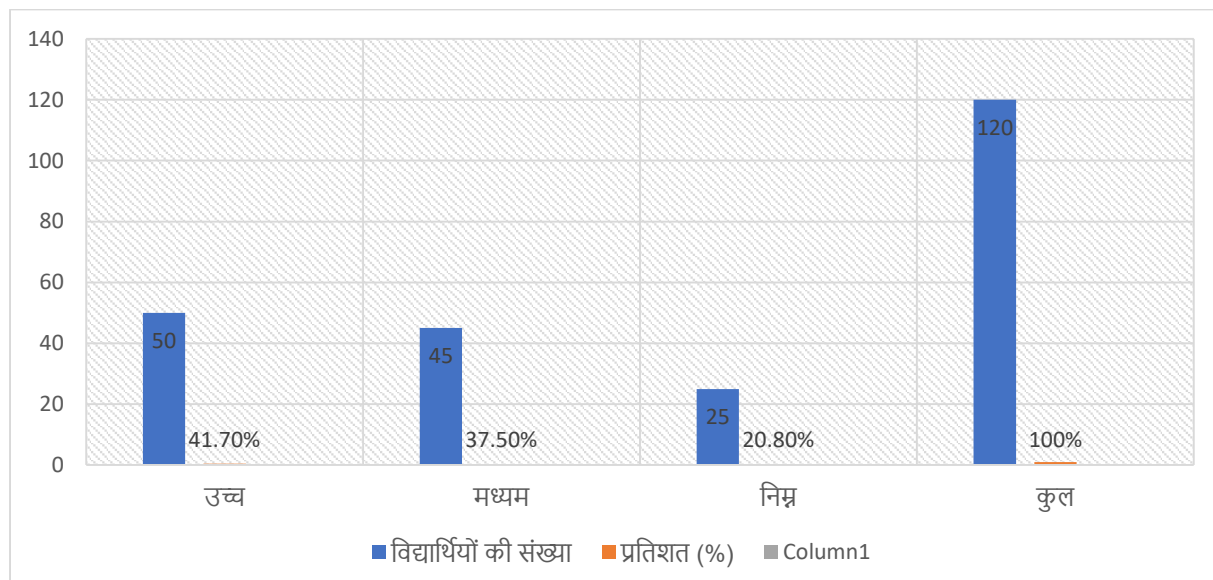
3.3 नमूना आकार एवं नमूना चयन विधि

- अध्ययन हेतु कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया।
- नमूना चयन के लिए सरल यादृच्छिक नमूना विधि अपनाई गई।

4 डाटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिकादृ1 : विद्यार्थियों में अनुशासन का स्तर

अनुशासन का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च	50	41.7%
मध्यम	45	37.5%
निम्न	25	20.8%
कुल	120	100%

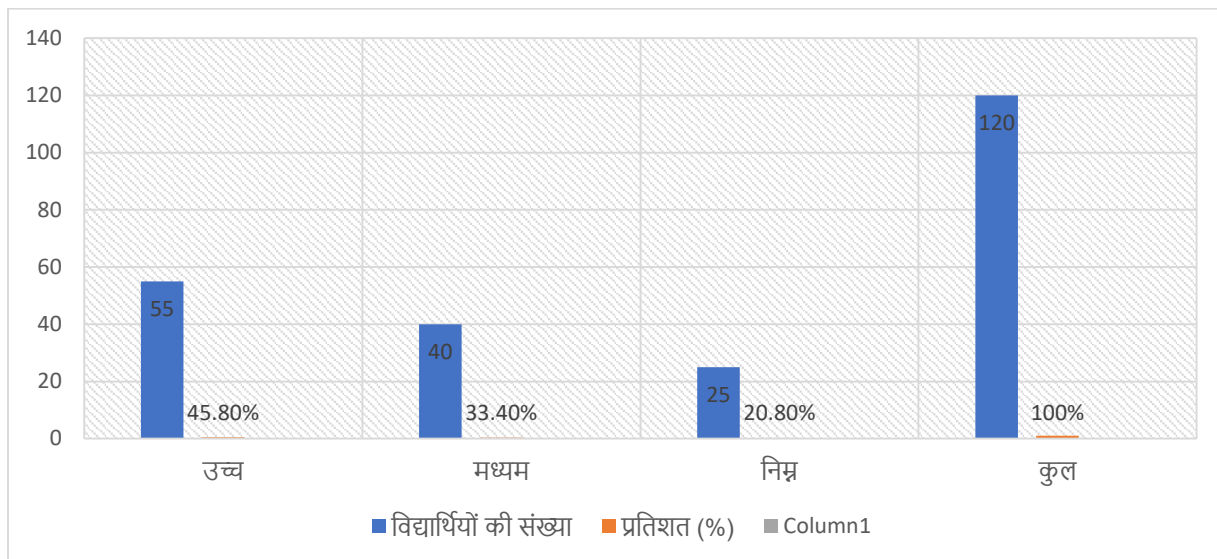


व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि 41-7% विद्यार्थियों में अनुशासन का स्तर उच्च पाया गया, जबकि 20.8: विद्यार्थियों में अनुशासन का स्तर निम्न है। इससे यह संकेत मिलता है कि अधिकांश विद्यार्थियों में अनुशासन संतोषजनक स्तर पर विकसित है।

तालिकादृ2 : विद्यार्थियों में सहयोग का स्तर

सहयोग का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च	55	45.8%
मध्यम	40	33.4%
निम्न	25	20.8%
कुल	120	100%

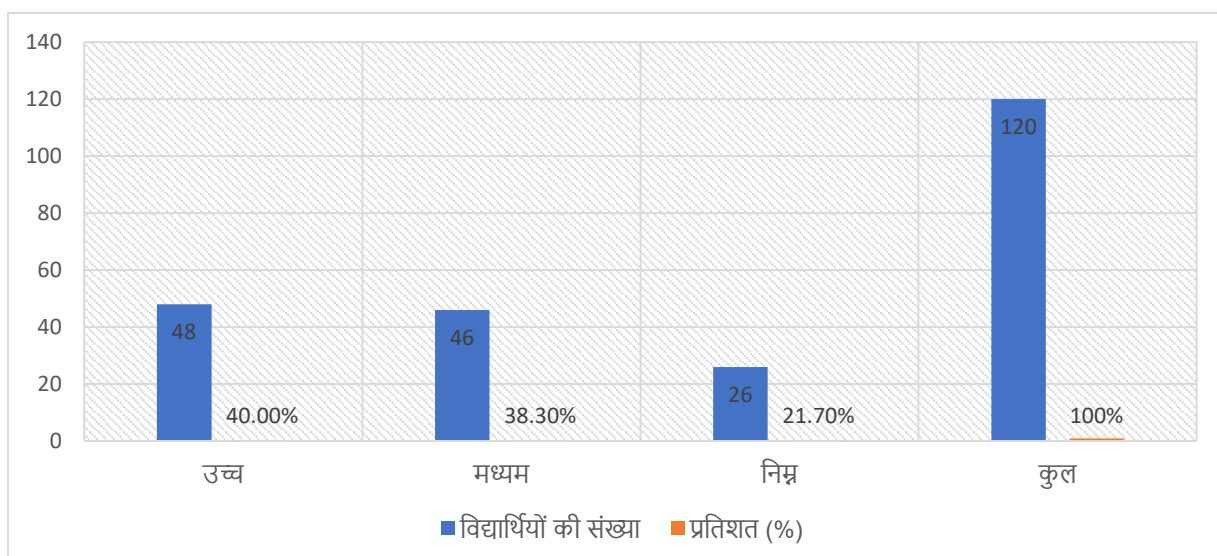


व्याख्या

तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 45-8% विद्यार्थियों में सहयोग का स्तर उच्च है। समूह कार्य एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ सहयोग की भावना को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

तालिका3 : विद्यार्थियों में सहिष्णुता का स्तर

सहिष्णुता का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च	48	40.0%
मध्यम	46	38.3%
निम्न	26	21.7%
कुल	120	100%



व्याख्या

तालिका से ज्ञात होता है कि 40% विद्यार्थियों में सहिष्णुता का स्तर उच्च है, जबकि लगभग 22% विद्यार्थियों में सहिष्णुता का स्तर निम्न पाया गया, जो चिंता का विषय है।

5 चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता जैसे सामाजिक मूल्यों का स्तर सामान्यतः मध्यम से उच्च पाया गया है। अनुशासन के संदर्भ में यह देखा गया कि विद्यालयी नियम, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और नियमित गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आत्म-नियंत्रण विकसित करने में सहायक हैं।

सहयोग के स्तर में अपेक्षाकृत अधिक प्रतिशत यह संकेत देता है कि सामूहिक गतिविधियाँ, खेलकूद और समूह कार्य विद्यार्थियों में सहयोगात्मक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं। वहीं सहिष्णुता के स्तर में कुछ विद्यार्थियों का निम्न प्रतिशत यह दर्शाता है कि विविधता को स्वीकार करने और मतभेदों को सहन करने की क्षमता अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई है।

यह चर्चा इस तथ्य को रेखांकित करती है कि विद्यालय सामाजिक मूल्यों के विकास का प्रमुख केंद्र है, किंतु इसके लिए योजनाबद्ध और मूल्य-आधारित प्रयासों की आवश्यकता है।

6 निष्कर्ष

- अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं
- अधिकांश विद्यार्थियों में अनुशासन का स्तर संतोषजनक पाया गया।
- सहयोग का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया, जो सकारात्मक संकेत है।
- सहिष्णुता के विकास के लिए अभी और प्रयास आवश्यक हैं।

7 सुझाव

- विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाया जाए।
- सह-पाठ्यक्रम एवं समूह गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए
- शिक्षकों को सामाजिक एवं नैतिक शिक्षा हेतु विशेष प्रशिक्षण दिया जाए
- विद्यालयों में सहिष्णुता एवं आपसी सम्मान पर आधारित कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- अभिभावकों को भी सामाजिक मूल्यों के विकास में सहभागी बनाया जाए।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, देवकी नंदन. (2023). *माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों की भूमिका: शैक्षिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य*. Pamir Transboundary Conference Proceedings. लिंक: <https://www.scitepress.org/Papers/2023/124986/124986.pdf>
2. भास्कर, नितेश. (2024). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का विकास*. AIIR Journal. लिंक: https://www.aiirjournal.com/uploads/Articles/2024/08/6332_09.More%20Nitesh%20Bhaskar.pdf
3. रहमान, एम. एच. (2021). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्य जागरूकता का अध्ययन*. Amogh Varta Journal. लिंक: https://www.amoghvarta.com/uploads/current_issue/Value-Awareness-among-Secondary-School-Students.pdf
4. मोहन, एस. (2023). *भारत में मूल्य शिक्षा: आवश्यकता और महत्व*. ResearchGate. लिंक: https://www.researchgate.net/publication/376071658_Value_Education_in_India-Need_and_Importance
5. संखला, प्रकाश. (2022). *वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन*. International Journal of Education & Technical Research. लिंक: <https://www.gyanvihar.org/journals/wp-content/uploads/2022/11/IJET-8-2-P1.pdf>
6. मोहम्मद, तलत फ़ातिमा, एवं प्रसाद, आर. शिवा. (2024). *माध्यमिक विद्यार्थियों में अनुशासन का अध्ययन*. International Journal in Special Education. लिंक: <https://www.rehabilitationjournals.com/special-education-journal/article/89/4-2-15-270.pdf>
7. जेटीर (JETIR). (2025). *माध्यमिक विद्यार्थियों में मूल मानव मूल्यों की जागरूकता: एक पायलट अध्ययन*. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research. लिंक: <https://www.jetir.org/papers/JETIR2501771.pdf>
8. शैलजा, एस., एवं वेंकूबा नारायणप्पा, पी. (2024). *माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का अध्ययन*. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). लिंक: <https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2401867.pdf>
9. मिश्रा, प्रियंका. (2022). *विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का संबंध*. शोधगंगा (पीएच.डी. शोध प्रबंध). लिंक: <https://shodhganga.inflibnet.ac.in>
10. शर्मा, अजय कुमार. (2019). *माध्यमिक विद्यार्थियों में अनुशासन एवं नैतिक विकास*. International Journal of Education. लिंक: <https://www.indianjournals.com>

11. गुप्ता, सीमा. (2018). *मूल्य शिक्षा और माध्यमिक विद्यालय*.
Educational Quest: An International Journal of Education.
लिंक: <https://www.indianjournals.com>
12. यादव, रमेश चंद्र. (2017). *किशोरों में सहिष्णुता एवं सामाजिक व्यवहार का अध्ययन*.
Journal of Educational Research.
लिंक: <https://www.researchgate.net>
13. शर्मा, सुनीता. (2020). *सहयोगात्मक अधिगम और सामाजिक मूल्य*.
International Journal of Research in Social Sciences.
लिंक: <https://www.ijrss.org>
14. सिंह, मनोज कुमार. (2021). *विद्यालयी अनुशासन और विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन*.
Indian Journal of Educational Studies.
लिंक: <https://www.researchgate.net>
15. वर्मा, पूजा. (2019). *माध्यमिक स्तर पर नैतिक मूल्यों का विकास*.
International Journal of Multidisciplinary Research.
लिंक: <https://www.ijmr.net>
16. कुमार, नीरज. (2020). *शिक्षा में सामाजिक मूल्यों की भूमिका*.
Journal of Indian Education (NCERT).
लिंक: <https://ncert.nic.in>
17. रानी, कविता. (2018). *विद्यालय और मूल्य निर्माण की प्रक्रिया*.
Educational Chronicle.
लिंक: <https://www.researchgate.net>
18. पांडेय, राजेश कुमार. (2022). *माध्यमिक विद्यार्थियों में सहयोगात्मक व्यवहार का अध्ययन*.
International Journal of Advanced Education and Research.
लिंक: <https://www.educationjournal.org>
19. देवी, सुषमा. (2017). *मूल्य शिक्षा एवं किशोर व्यवहार*.
Indian Journal of Teacher Education.
लिंक: <https://www.researchgate.net>
20. सिंह, अंजली. (2021). *सहिष्णुता और सामाजिक समरसता: विद्यालयी संदर्भ*.
शोधगंगा (एम.एड./पीएच.डी.).
लिंक: <https://shodhganga.inflibnet.ac.in>